एम.ए. (हिन्दी) (प्रथम वर्ष) अनिवार्य बीज पत्र -१
प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

प्रस्तावना :

हिन्दी के आदिकालीन काव्य अपनी पृष्ठभूमि में अपभ्रंश के अवदान को पूरी तरह समेटे हुए है। प्रबंध, कड़वकबद्ध, मुक्तक आदि काव्यरूपों में रचित और अपभ्रंश, अवहट्ट एवं देशी भाषा में अभिव्यंजित आदिकालीन साहित्य की परवर्ती कालों को प्रभावित करने में सक्रिय एवं सक्षम भूमिका रही है। इसके अध्ययन के बिना किसी भी काल का वास्तविक मूल्यांकन संभव नहीं है। पूर्वमध्यकालीन (भक्तिकालीन) काव्य लोक-जागरण और लोकमंगल का नवीन स्वर लेकर आया। इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परंपरा को सुरक्षित रखा है। उत्तर मध्यकालीन (रीतिकाल) काव्य अपनी कलात्मक अभिव्यंजना में बेजोड़ है। इनका अध्ययन समाज, संस्कृति और युग की घड़कनों को समग्रता में समझने के लिए अनिवार्य है।

इस प्रश्नपत्र में संस्तुत ८ कवियों में से कोई ६ कवि पठनीय हैं। उनकी कालजयी कृतियों का उल्लेख यहाँ कर दिया गया है। व्याख्यार्थ निश्चित पाठ्यांश संबंधित विश्वविद्यालय निर्धारित करेंगे। द्रुतपाठ के रुप में अध्ययन के लिए २० कवि रखे गए है जिनमें से किन्हीं १० का चयन अपेक्षित है। उनमें से किन्हीं पाँच पर लघुत्तरी प्रश्न पूछे जाएँ ताकि परीक्षार्थी छोड़-छोड़कर न पढ़े बल्कि पूरे पाठ्यवृत्त का अध्ययन करे।

पाठ्यविषय :

व्याख्या एवं विवेचना के लिए निम्नांकित ८ कवियों में से किन्हीं ६ कवियों का अध्ययन किया जाएगा :

१. **चंदबरदायी :** पृथ्वीराज रासो, संपा. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. नामवर सिंह (कोई एक समय)
२. **विद्यापति :** विद्यापति पदावली, संपा. रामवृक्ष बेनीपुरी (कोई २५ पद)
३. **कबीर :** कबीर ग्रंथावली, संपा. डॉ. श्यामसुंदर दास (विभिन्न अंगों से चयनित १०० साखियाँ तथा २५ पद)
४. **जायसी :** पद्मावत, संपा. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (कोई २ खण्ड)
५. **सूरदास :** भ्रमरगीत सार, संपा. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (कोई ५० पद)
६. **तुलसीदास :** रामचरित मानस (गीता प्रेस) (किसी एक काण्ड के ५० दोहे - चौपाइयाँ)
७. **घनानंद :** घनानंद कवित्त, संपा. आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र (कोई २५ छंद)
८. **बिहारीलाल :** बिहारी रत्नाकर संपा. जगन्नाथदास रत्नाकर (कोई १०० दोहे)

द्रुत पाठ हेतु निम्नांकित कवियों में से किन्ही दस कवियों का चयन संबंधित विश्वविद्यालय करेंगे। इनमें से किन्हीं पाँच पर लघुत्तरी प्रश्न पूछे जाएँगे।

सरहपाद, गोरखनाथ, हेमचंद, अब्दुर्रहमान, अमीर खुसरो, विद्याधर, नन्ददास, दादू, मीराबाई, रैदास, रहीम, रसखान, केशव, नामदेव, देव, मतिराम भूषण, सेनापति, पद्माकर, गुरु गोविन्दसिंह।

अंक विभाजन :

३ व्याख्याएँ : ३X१० = ३० अंक
२ आलोचनात्मक प्रश्न : २X१५ = ३० अंक
५ लघुत्तरी प्रश्न : ५X४ = २० अंक
२० वस्तुनिष्ठ/अति लघुत्तरी प्रश्न २०X१ = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) (प्रथम वर्ष) अनिवार्य बीज पत्र -२
आधुनिक हिन्दी काव्य

प्रस्तावना :

आधुनिक हिन्दी काव्य पुनर्नवा के रूप में नवीन भावभूमि एवं वैचारिक गतिशीलता लेकर अवतरित हुआ। आधुनिकता, इहलौकिकता, विश्वजनीनता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। उपेक्षित विषय भी यहाँ सार्थक एवं प्रासंगिक हो गए। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से अद्यावधि तक की संवेदनाएँ, भावनाएँ एवं नूतन विचार सरणियाँ इसमें अभिव्यक्त हुई हैं। मुकम्मल मनुष्य इसमें अभिव्यंजित हुआ है। विविध धाराओं में प्रवहमान आधुनिक हिन्दी काव्य प्रेरणा और ऊर्जा का अजस्र स्रोत है। अतः संवेदना तथा ज्ञान क्षितिज के विस्तार के लिए इसका अध्ययन अत्यंत आवश्यक एवं प्रासंगिक है। इस प्रश्नपत्र में संस्तुत ८ कवियों में से कोई ६ कवि पठनीय हैं। व्याख्यार्थ पाठ्यांश संबंधित विश्वविद्यालय निर्धारित करेंगे। व्याख्या और विवेचना के लिए किन्हीं ६ कवियों का अध्ययन किया जाएगा।

पाठ्यविषय :

- **मैथिलीशरण गुप्त** : साकेत (नवम सर्ग) अथवा अन्य कोई दो सर्ग।
- **जयशंकर प्रसाद** : कामायनी (चिन्ता, श्रद्धा, इड़ा, लज्जा, काम, रहस्य में से कोई तीन सर्ग)
- **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** : राम की शक्तिपूजा, तुलसीदास के १० छंद अथवा सरोज स्मृति एवं कुकुरमुत्ता
- **सुमित्रानंदन पंत** : परिवर्तन, नौका विहार, एक तारा, हिमाद्रि, संध्या के बाद, मौन निमंत्रण, अलमोड़े का वसंत, सोनजुही, आ धरती कितना देती है, शीर्षक कविताओं में से कोई ५ कविताएँ
- **रामधारी सिंह 'दिनकर'** : उर्वशी अथवा कुरुक्षेत्र (कोई एक अंक)
- **स. ही. वात्स्यायन 'अज्ञेय'** : नदी के द्वीप, असाध्य वीणा, बावरा अहेरी तथा पाँच अन्य कविताएँ
- **ग. मा. मुक्तिबोध** : अँधेरे में अथवा कोई तीन लम्बी कविताएँ
- **नागार्जुन** : कोई १० कविताएँ

द्रुतपाठ हेतु निम्नांकित कवियों में से किन्ही दस कवियों का चयन संबंधित विश्वविद्यालय करेंगे। इनमें से किन्हीं पाँच पर लघुत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे।

१.	श्रीधर पाठक	२.	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
३.	जगन्नाथदास 'रत्नाकर'	४.	महादेवी वर्मा
५.	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	६.	हरिवंशराय बच्चन
७.	केदारनाथ अग्रवाल	८.	त्रिलोचन शास्त्री
९.	गिरिजाकुमार माथुर	१०.	भवानीप्रसाद मिश्र
११.	शमशेर बहादुर सिंह	१२.	श्री नरेश मेहता
१३.	धर्मवीर भारती	१४.	रघुवीर सहाय
१५.	कुँवर नारायण	१६.	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना
१७.	धूमिल	१८.	दुष्यन्त कुमार
१९.	जगदीश गुप्त	२०.	अशोक बाजपेयी

अंक विभाजन :

३ व्याख्याएँ : ३X१० = ३० अंक

२ आलोचनात्मक प्रश्न : २X१५ = ३० अंक

५ लघुत्तरी प्रश्न : ५X४ = २० अंक

२० वस्तुनिष्ठ/अति लघुत्तरी प्रश्न २०X१ = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) (प्रथम वर्ष) अनिवार्य बीज पत्र -३
आधुनिक गद्य साहित्य

प्रस्तावना :

आधुनिक काल में गद्य साहित्य को अभूतपूर्व सफलता मिली है। यह मानव-मन और मस्तिष्क की अभिव्यक्ति का सशक्त एवं अनिवार्य माध्यम माना गया है। मनुष्य का राग-विराग, तर्क-वितर्क तथा चिंतन-मनन जिस रागात्मकता के साथ कौशलपूर्ण ढंग से गद्य में अभिव्यंजित होता है, वैसा अन्य साहित्यांग में नहीं। आधुनिक काल में गद्य के विविध रूपों का विकास इस तथ्य का साक्षी है कि प्रौढ़ मन-मस्तिष्क की पूर्ण अभिव्यक्ति गद्य में ही संभव है। निबंध गद्य का प्रौढ-शक्तिशाली प्रतिरूप, उसकी वैयक्तिक एवं स्वातंत्र्य चेतना का विश्वसनीय प्रतिनिधि है। नाटक, उपन्यास, कहानी तथा अन्य विविध विधाओं के रूप में गद्य साहित्य वामन से विराट बन गया है आज मनुष्य को उसकी प्रकृति, परिवेश, परिस्थिति तथा चिंतन की विकास-प्रक्रिया के साथ सहज प्रमाणिक रूप में गद्य के माध्यम से ही जाना जा सकता है। अतः इसका अध्ययन अनिवार्य है। इस प्रश्न पत्र में २ नाटक, २ उपन्यास, ७ निबंध, ७ कहानियाँ एवं १ चरितात्मक कृति पठनीय हैं। इनका चयन संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा।

पाठ्य विषय :

व्याख्या एवं विवेचन के लिए आधारित

१. स्कन्दगुप्त अथवा चन्द्रगुप्त (जयशंकर प्रसाद)

२. आषाढ़ का एक दिन अथवा आधे-अधूरे (मोहन राकेश)

३. गोदान (प्रेमचंद) अथवा शेखर एक जीवनी (भाग १ एवं २, अज्ञेय)

४. बाणभट्ट की आत्मकथा (आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी) अथवा
मैला आँचल (फणीश्वरनाथ रेणु)

५. निबंध संकलन : निम्नलिखित निबंधकारों में से किन्हीं ७ निबंधकारों के श्रेष्ठ निबंधों का अध्ययन- बालकृष्ण भट्ट, आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, रामवृक्ष बेनीपुरी, आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, डॉ. रामविलास शर्मा, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, हरिशंकर परसाई।

६. कहानी संकलन : निम्नलिखित कहानीकारों में से किन्ही ७ कहानीकारों की श्रेष्ठ कहानियों का अध्ययन - चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद, जैनेन्द्र, धर्मवीर भारती, कमलेश्वर निर्मल वर्मा उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, राजेन्द्र यादव।

७. पथ के साथी (महादेवी वर्मा) अथवा आवारा मसीहा (विष्णु प्रभाकर)

द्रुत पाठ हेतु १० नाटककार, १० उपन्यासकार, १० निबंधकार, १० कहानीकार और ५ स्फुट गद्य विधाओं के रचनाकार रखे गये है। इनमें हरेक विधा से संबंधित ५-५ गद्यकारों का चयन संबंधित विश्वविद्यालय करेगा और प्रत्येक विधा से संबंधित १ लघुत्तरी प्रश्न पूछा जाएगा।

- **नाटककार** : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, लक्ष्मीनारायण मिश्र, डॉ. रामकुमार वर्मा, भुवनेश्वर, उपेन्द्रनाथ अश्क, विष्णु प्रभाकर, जगदीशचन्द्र माथुर, धर्मवीर भारती, लक्ष्मीनारायण लाल, शंकर शेष।

- **उपन्यासकार** : जैनेन्द्र, राहुल सांकृत्यायन, भगवतीचरण वर्मा, यशपाल, अमृतलाल नागर, रामदरश मिश्र, निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी, बालशौरि रेड्डी, मन्नू भंडारी।

- **निबंधकार** : भारतेंदु हरिश्चन्द्र, प्रतापनारायण मिश्र, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, बालमुकुन्द गुप्त, बाबू श्यामसुन्दर दास, शिवपूजन सहाय, सरदार पूर्ण सिंह, डॉ. नगेन्द्र, डॉ. इन्द्रनाथ मदान, डॉ. विश्वनाथ अय्यर।

- **कहानीकार** : बंग महिला, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', रांगेय राघव, अज्ञेय, यशपाल, फणीश्वरनाथ रेणु, मुक्तिबोध, शिवप्रसाद सिंह, भीष्म साहनी, अमरकांत।

- **स्फुट ग्रंथ** :
  १. अमृत राय (कलम का सिपाही);
  २. शिवप्रसाद सिंह (उत्तरयोगी);
  ३. हरिवंशराय बच्चन (क्या भूलूँ क्या याद करुँ);
  ४. राहुल सांकृत्यायन (घुमक्कड़ शास्त्र)
  ५. माखनलाल चतुर्वेदी (साहित्य देवता)।

अंक विभाजन :

३ व्याख्याएँ : ३x१० = ३० अंक
२ आलोचनात्मक प्रश्न : २x१५ = ३० अंक
५ लघुत्तरी प्रश्न : ५x४ = २० अंक
२० वस्तुनिष्ठ/अति लघुत्तरी प्रश्न २०x१ = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) (प्रथम वर्ष) अनिवार्य बीज पत्र -४
भाषाविज्ञान एवं हिन्दी भाषा

प्रस्तावना :

साहित्य आद्यंत एक भाषिक निर्मिति है। साहित्य के गंभीर अध्ययन के लिए भाषिक व्यवस्था का सुस्पष्ट सर्वांगीण ज्ञान अपरिहार्य है। भाषाविज्ञान भाषा की वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रणाली के रूप में भाषिक इकाइयों तथा भाषा संरचना के विभिन्न स्तरों पर उनके अंतरसंबंधो के विन्यास को आलोकित कर न केवल अध्येता को भाषिक अंतर्दृष्टि देता है अपितु भाषा-विषयक विवेचन के लिए एक निरूपक भाषा भी प्रदान करता है। मूल भाषा व्यवस्था पर आरोपित द्वितीयक साहित्यिक व्यवस्था की भाषिक प्रकृति की स्वीकृति, प्राचीन भारतीय एवं अधुनातन पाश्चात्य साहित्य चिंतन में समान रूप से लक्षणीय है। कहने की आवश्यकता नहीं कि भाषा के साहित्येतर, प्रयोजनमूलक रुपों के अध्ययन में भी भाषा वैज्ञीनिक चिंतन का लाभ उतना ही महत्त्वपूर्ण है।

पाठ्य विषय :

(क) भाषाविज्ञान :

- **भाषा और भाषाविज्ञान** : भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण, भाषा-व्यवस्था और भाषा-व्यवहार, भाषा-संरचना और भाषिक-प्रकार्य। भाषाविज्ञान : स्वरूप एवं व्याप्ति, अध्ययन की दिशाएँ-वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक।
- **स्वनप्रक्रिया** : स्वनविज्ञान का स्वरूप और शाखाएँ, वागवयव और उनके कार्य, स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण, स्वनगुण, स्वनिक परिवर्तन। स्वनिम विज्ञान का स्वरूप, स्वनिम की अवधारणा, स्वनिम के भेद, स्वनिमिक विश्लेषण।
- **व्याकरण** : रूपप्रक्रिया का स्वरुप और शाखाएँ,रूपिम की अवधारणा और भेद : मुक्त-आबद्ध, अर्थदर्शी और संबंधदर्शी, संबंधदर्शी रूपिम के भेद और प्रकार्य। वाक्य की अवधारणा, अभिहितान्वयवाद और अन्विताभिधानवाद, वाक्य के भेद, वाक्य-विश्लेषण, निकटस्थ-अवयव विश्लेषण, गहन-संरचना और बाह्य-संरचना।
- **अर्थविज्ञान** : अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का संबंध, पर्यायता, अनेकार्थता, विलोमता, अर्थ-परिवर्तन।

- **साहित्य और भाषा-विज्ञानः** साहित्य के अध्ययन में भाषा-विज्ञान के अंगों की उपयोगिता।

(ख) हिन्दी भाषा :

- **हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि** : प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ- वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ। मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ - पालि; प्राकृत-शौरसेनी, अर्धमागधी, मागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण।
- **हिन्दी का भौगोलिक विस्तार** : हिन्दी की उपभाषाएँ, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियाँ। खड़ीबोली, ब्रज और अवधी की विशेषताएँ।
- **हिन्दी का भाषिक स्वरूप :** हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था-खंड्य, खंड्येतर। हिन्दी शब्द रचना-उपसर्ग, प्रत्यय, समास। रूपरचना-लिंग, वचन और कारक-व्यवस्था के संदर्भ में हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रियारूप। हिन्दी वाक्य-रचनाः पदक्रम और अन्विति।
- **हिन्दी के विविध रूप** : संपर्क-भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा के रूप में हिन्दी, माध्यम-भाषा, संचार-भाषा, हिन्दी की सांविधानिक स्थिति।
- **हिन्दी में कंप्यूटर सुविधाएँः** आंकड़ा-संसाधन और शब्द-संसाधन, वर्तनी-शोधक, मशीनी अनुवाद, हिन्दी भाषा-शिक्षण।
- **देवनागरी लिपि** : विशेषताएँ और मानकीकरण।

अंक विभाजन :

भाषाविज्ञान (२ आलोचनात्मक प्रश्न) : २x१५ = ३० अंक
हिन्दी भाषा (२ आलोचनात्मक प्रश्न) : २x१५ = ३० अंक
५ लघुत्तरी प्रश्न : ५x४ = २० अंक
२० वस्तुनिष्ठ/अति लघुत्तरी प्रश्न २०x१ = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) द्वितिय वर्ष अनिवार्य बीज पत्र -५
काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन

प्रस्तावना :

रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र और साहित्यालोचन का ज्ञान अपरिहार्य है। इनसे साहित्यिक समझ विकसित होती है। वह दृष्टि मिलती है, जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्यवत्ता की वास्तविक परख की जा सके। सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वाद प्राप्त करने, रचना को उसकी समग्रता में समझने और जाँचने-परखने के लिए भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी के निजी साहित्यालोचन का अध्ययन समीचीन है।

पाठ्यविषय

(क) संस्कृत काव्यशास्त्र : काव्य-लक्षण, काव्य-हेतु, काव्य-प्रयोजन, काव्य के प्रकार।

- **रस-सिद्धांत** : रस का स्वरूप, रस-निष्पत्ति, रस के अंग, साधारणीकरण, सहृदय की अवधारणा।
- **अलंकार-सिद्धांत** : मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण।
- **रीति-सिद्धांत** : रीति की अवधारणा, काव्य-गुण, रीति एवं शैली, रीति सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ।
- **वक्रोक्ति-सिद्धांत** : वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद
- **ध्वनि-सिद्धांत** : ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि-सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद, गुणीभूत-व्यंग्य, चित्र-काव्य।
- **औचित्य-सिद्धांत** : प्रमुख स्थापनाएँ, औचित्य के भेद।

(ख) पाश्चात्य काव्य शास्त्र

- **प्लेटो** : काव्य-सिद्धांत।
- **अरस्तू** : अनुकरण-सिद्धांत; त्रासदी विवेचन।
- **लोंजाइनस** : उदात्त की अवधारणा।
- **ड्राइडन** : काव्य-सिद्धांत।
- **वर्ड्सवर्थ** : काव्य-भाषा का सिद्धांत।
- **कॉलरिज** : कल्पना-सिद्धांत और ललित-कल्पना।
- **मैथ्यू आर्नल्ड** : आलोचना का स्वरूप और प्रकार्य।
- **टी. एस. इलियट** : परंपरा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा, निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत, वस्तुनिष्ठ समीकरण,संवेदनशीलता का असाहचर्य।
- **आई. ए. रिचर्ड्स** : रागात्मक अर्थ, संवेगों का संतुलन, व्यावहारिक आलोचना।
- **सिद्धांत और वाद** : आभिजात्यवाद, स्वच्छंदतावाद, अभिव्यंजनावाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषण तथा अस्तित्ववाद।
- **आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ** : संरचनावाद, शैलीविज्ञान, विखंडनवाद, उत्तर-आधुनिकतावाद।

(ग) हिन्दी कवि-आचार्यों का काव्यशास्त्रीय चिंतन :

- लक्षण-काव्य-परंपरा एवं कवि-शिक्षा ।

(घ) हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियाँ ।

- शास्त्रीय, व्यक्तिवादी, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रभाववादी, मनोविश्लेषणवादी, सौंदर्यशास्त्रीय, शैलीवैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय ।

(ङ) व्यावहारिक समीक्षा :प्रश्नपत्र में पूछे गए किसी काव्यांश की स्वविवेक के अनुसार समीक्षा ।

अंक विभाजन :

संस्कृत काव्यशास्त्र १ आलोचनात्मक प्रश्न : १x१५ = १५ अंक
पाश्चात्य काव्यशास्त्र १ आलोचनात्मक प्रश्न : १x१५ = १५ अंक
हिन्दी काव्यशास्त्र १ आलोचनात्मक प्रश्न : १x१५ = १५ अंक
व्यावहारिक समीक्षा = १५ अंक
५ लघूत्तरी प्रश्न ५x४ = २० अंक
२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न २०x१ = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) अनिवार्य बीज पत्र -६
हिन्दी साहित्य का इतिहास

प्रस्तावना :

किसी भी देश के जनमानस की मनोवृत्ति, दशा एवं संवेदना के विविध स्वरूपों का संचित रूप वहाँ के साहित्य में परिलक्षित होता है । सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि विभिन्न परिस्थितियों के कारण, चित्तवृत्तियों में परिवर्तन होता है, फलतः साहित्यिक रूपों में भी बदलाव आ जाता है । इस बदली हुई विकास प्रक्रिया को साहित्य के इतिहास के माध्यम से ही देखा-परखा जा सकता है । हिन्दी क्षेत्र की परिस्थितियों से कमोबेश पूरा भारत प्रभावित होता रहा है , जिसकी गूँज हिन्दी साहित्य में प्रतिध्वनित है । आठवीं-नवीं शताब्दी से लेकर आज तक के विकास परिदृश्य के साथ साहित्यिक सृजनशीलता के विविध रूपों, प्रवृत्तियों और भाषा-शैलियों का ज्ञान साहित्य के इतिहास के माध्यम से ही किया जा सकता है । अतः असका अध्ययन सर्वथा सार्थक एवं समीचीन है ।

पाठ्यविषय

- इतिहास-दर्शन और साहित्येतिहास ।
- हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा, आधारभूत सामग्री और साहित्येतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएँ ।
- हिन्दी साहित्य का इतिहास : काल-विभाजन, सीमा-निर्धारण और नामकरण ।
- हिन्दी साहित्य : आदिकाल की पृष्ठभूमि, सिद्ध और नाथ-साहित्य, रासो-काव्य,जैन-साहित्य ।
- हिन्दी साहित्य के आदिकाल का ऐतिहासिक परिदृश्य, साहित्यिक प्रवृत्तियाँ, काव्यधाराएँ, गद्य साहित्य, प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाएँ ।

- पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक-चेतना एवं भक्ति-आंदोलन, विभिन्न काव्यधाराएँ तथा उनका वैशिष्ट्य।
- प्रमुख निर्गुण संत कवि और उनका अवदान।
- भारत में सूफी मत का विकास तथा सूफी कवि और काव्यग्रंथ, सूफी काव्य में भारतीय संस्कृति एवं लोकजीवन के तत्व।
- राम और कृष्ण काव्य, रामकृष्ण काव्येत्तर काव्य, भक्तीतर काव्य, प्रमुख कवि और उनका रचनागत वैशिष्ट्य। भक्तिकालीन-गद्य -साहित्य।
- उत्तरमध्यकाल(रीतिकाल) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, काल-सीमा और नामकरण, दरबारी संस्कृति और लक्षण-ग्रंथों की परंपरा, रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराएँ (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त)प्रवृत्तियाँ और विशेषताएँ, प्रतिनिधि रचनाकार और रचनाएँ। रीतिकालीन गद्य साहित्य।
- आधुनिककाल की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि : सन १८५८ई की राजक्रांति और पुनर्जागरण।
- भारतेंदु युग : प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।
- द्विवेदी युग : प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।
- हिन्दी स्वच्छंदतावादी चेतना का अग्रिम विकास- छायावादी काव्यः प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।
- उत्तरछायावादी काव्य की विविध प्रवृत्तियाँ - प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, नवगीत, समकालीन कविता। प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।
- हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाओं (कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा, रिपोर्ताज आदि) का विकास।
- हिन्दी आलोचना का उद्भव और विकास।
- दक्खिनी हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त परिचय।
- उर्दू साहित्य का संक्षिप्त परिचय।
- हिन्दीतर क्षेत्रों तथा देशान्तर में हिन्दी भाषा और साहित्य।

अंक विभाजन :

४ आलोचनात्मक प्रश्न : ४X१५ = ६० अंक

५ लघूत्तरी प्रश्न : ५X४ = २० अंक

२- वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न : २०X१ = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) अनिवार्य बीज पत्र -७
प्रयोजनमूलक हिन्दी

प्रस्तावना :

भाषा मानव जीवन की अनिवार्य सामाजिक वस्तु और व्यावहारिक चेतना है जिसके दो मुख्य आयाम या प्रकार्य हैं - सौन्दर्यपरक और प्रयोजनपरक। भाषा के प्रयोजनपरक आयाम का संबंध हमारी सामाजिक आवश्यकताओं और जीवन-व्यवहार से है और व्यक्तिपरक होकर भी जो समाज- सापेक्ष सेवा माध्यम(सर्विस टूल्स) के रूप में प्रयुक्त होती है। उत्तरआधुनिक काल में जीवन और समाज की विभिन्न आवश्यकताओं और दायित्वों की पूर्ति के लिए विभिन्न व्यवहार क्षेत्रों में उपयोग की जानेवाली प्रयोजनमूलक हिन्दी का अध्ययन अति अपेक्षित है। इसके विविध आयामों से न केवल रोजगार या जीविका की समस्या हल होगी अपितु राष्ट्र भाषा तथा राजभाषा का संस्कार भी दृढ़ होगा।

पाठ्यविषय

खण्ड क : कामकाजी हिन्दी

- हिन्दी के विभिन्न रूप - सर्जनात्मक भाषा, संचार भाषा, राजभाषा, माध्यम भाषा, मातृभाषा
- कार्यालयी हिन्दी (राजभाषा) के प्रमुख प्रकार्य : प्रारूपण, पत्र लेखन, संक्षेपण, पल्लवन, टिप्पण
- पारिभाषिक शब्दावली - स्वरूप एवं महत्त्व, पारिभाषिक शब्दावली - निर्माण के सिद्धांत।
- ज्ञान विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली (निर्धारित शब्द)

हिन्दी कंप्यूटिंग

- कंप्यूटर : परिचय, रूपरेखा, उपयोग तथा वेब पब्लिशिंग का परिचय
- इंटरनेट संपर्क उपकरणों का परिचय, प्रकार्यात्मक रख-रखाव एवं इंटरनेट समय मितव्ययिता के सूत्र
- वेब पब्लिशिंग
- इंटर एक्सप्लोइट अथवा नेटस्केप
- लिंक, ब्राउजिंग, ई मेल भेजना/प्राप्त करना, हिन्दी के प्रमुख इंटरनेट पोर्टल, डाउनलोडिंग व अपलोडिंग, हिन्दी सॉफ्टवेयर,पैकेज।

खण्ड ख : पत्रकारिता

- पत्रकारिता : स्वरूप एवं विभिन्न प्रकार
- हिन्दी पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास
- समाचार लेखन कला
- संपादन के आधारभूत तत्व
- व्यावहारिक प्रूफ शोधन
- शीर्षक की संरचना, लीड, इंट्रो एवं शीर्षक-संपादन
- संपादकीय - लेखन
- पृष्ठ-सज्जा

- साक्षात्कार, पत्रकार वार्ता एवं प्रेस प्रबंधन
- प्रमुख प्रेस कानून एवं आचार संहिता

खण्ड ग : मीडिया लेखन

- जनसंचार : प्रौद्योगिकी एवं चुनौतियाँ
- विभिन्न जनसंचार माध्यमों का स्वरूप-मुद्रण, श्रव्य, दृश्य-श्रव्य, इंटरनेट।
- श्रव्य माध्यम (रेडियो)
  मौखिक भाषा की प्रकृति। समाचार-लेखन एवं वाचन। रेडियो नाटक। उद्घोषणा लेखन। विज्ञापन लेखन। फीचर तथा रिपोर्ताज।
- दृश्य -श्रव्य माध्यम (फिल्म; टेलीविजन एवं वीडियो)
- दृश्य माध्यमों में भाषा की प्रकृत्ति। दृश्य एवं श्रव्य सामग्री का सामंजस्य। पार्श्व वाचन (वायस ओवर)। पटकथा लेखन। टेलीड्रामा/डॉक्यू ड्रामा, संवाद लेखन। साहित्य की विधाओं का दृश्य माध्यमों में रूपांतरण। विज्ञापन की भाषा।
- इंटरनेट : सामग्री सृजन (Content Creation)

खण्ड घ : अनुवाद : सिद्धांत एवं व्यवहार

- अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवं प्रविधि
- हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका
- कार्यालयी हिन्दी और अनुवाद
- जनसंचार माध्यमों का अनुवाद
- विज्ञापन में अनुवाद
- वैचारिक-साहित्य का अनुवाद
- वाणिज्यिक-अनुवाद
- वैज्ञानिक, तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में अनुवाद
- विधि- साहित्य की हिन्दी और अनुवाद
- व्यावहारिक-अनुवाद-अभ्यास
- कार्यालयी अनुवाद : कार्यालयी एवं प्रशासनिक शब्दावली, प्रशासनिक प्रयुक्तियाँ, पदनाम, विभाग आदि।
- पत्रों के अनुवाद
- पदनामों, अनुभागों, दस्तावेजों, प्रतिवेदनों के अनुवाद
- बैंक-साहित्य के अनुवाद का अभ्यास
- विधि-साहित्य के अनुवाद का अभ्यास
- साहित्यिक-अनुवाद के सिद्धांत एवं व्यवहार : कविता, कहानी नाटक।
- सारानुवाद
- दुभाषिया प्रविधि
- अनुवाद पुनरीक्षण एवं मूल्यांकन

अंक विभाजन :

४ आलोचनात्मक प्रश्न : ४X१५ = ६० अंक
(प्रत्येक खण्ड से एक-एक)
५ लघूत्तरी प्रश्न : ५X४ = २० अंक
२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न : २०X१ = २० अंक

अथवा
एम.ए. (हिन्दी) अनिवार्य बीज पत्र -७
भारतीय साहित्य

प्रस्तावना :

भारतीय भाषाओं में हिन्दी भाषा और साहित्य का स्थान अन्य प्रांतीय भाषाओं की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण है, इसलिए हिन्दी साहित्याध्ययन को अधिकाधिक गंभीर तथा प्रशस्त बनाना अत्यंत आवश्यक है। एक समेकित भारतीय साहित्य की रूपरचना के लिए हिन्दी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से हिन्दी के स्नातकोत्तर विद्यार्थीयों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है। तभी उनके ज्ञान-क्षितिज एवं सांस्कृतिक दृष्टि का विकास होगा। यही नहीं, इससे हिन्दी-अध्ययन का अंतरंग विस्तार भी होगा। इस प्रश्नपत्र के चार खण्ड होंगे। प्रत्येक खण्ड से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

पाठ्यविषय :

प्रथम खंड

१. भारतीय साहित्य का स्वरूप
२. भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ
३. भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिंब
४. भारतीयता का समाजशास्त्र
५. हिन्दी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति

द्वितीय खंड

इसके अंतर्गत हिन्दीतर साहित्य का अध्ययन अपेक्षित है, जो तीन वर्गों में विभाजित है -

१. दाक्षिणात्य भाषा वर्ग - मलयालम, तमिल, तेलुगु, कन्नड़
२. पूर्वांचल भाषा वर्ग - उड़िया, बँगला, असमिया, मणिपुरी
३. पश्चिमोत्तर भाषा वर्ग - मराठी, गुजराती, पंजाबी, कश्मीरी, उर्दू।

निर्देश

१. प्रत्येक विद्यार्थी इन १३ विकल्पों में से एक भाषा का चयन करेगा, बशर्ते वह भाषा उसकी अपनी क्षेत्रीय भाषा से भिन्न वाले वर्ग से संबंधित हो।

२. विद्यार्थी एक भाषा वर्ग (दक्षिणात्य/पूर्वांचल/पश्चिमोत्तर) में से किसी एक के साहित्य के इतिहास का अध्ययन करेगा।

तृतीय खंड

इस खण्ड के अंतर्गत तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षित है। इसमें द्वितीय खण्ड में निर्धारित किसी एक हिन्दीतर भाषा-साहित्य के साथ हिन्दी को जोड़कर अध्ययन करना होगा।

चतुर्थ खण्ड

इसके अंतर्गत ३ उपन्यास, ३ कविता संग्रह और ३ नाटक प्रस्तावित हैं। इनमें से किसी १ उपन्यास, १ काव्य-संग्रह और १ नाटक का चयन संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा, बशर्ते वह कृति विश्वविद्यालय से संबंधित क्षेत्रीय भाषा की न हो। इन पुस्तकों से मात्र आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे।

उपन्यास

१. एक इमली की कहानी (तमिल-सुन्दर रामास्वामी)
२. अग्निगर्भ (बंगला-महाश्वेता देवी)
३. मृत्युंजय (असमिया-वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य)

कविता संग्रह

१. कोच्चिन के दरख्त (मलयालम - के.जी.शंकरपिल्लै)
२. वर्षा की सुबह (उड़िया - सीताकान्त महापात्र)
३. बीच का रास्ता नहीं होता (पंजाबी - पाश)

नाटक

१. घासीराम कोतवाल (मराठी-विजय तेन्दुलकर)
२. हयवदन (कन्नड़-गिरीश कर्नाड)
३. जसमा ओडन (गुजराती-शान्ता गांधी)

अंक विभाजन :

४ आलोचनात्मक प्रश्न : ४ X १५ = ६० अंक
५ लघुत्तरी प्रश्न : ५ X ४ = २० अंक
२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न : २० X १ = २० अंक

एम.ए. (हिन्दी) अनिवार्य बीज पत्र -८
नाटक और रंगमंच

प्रस्तावना :

नाटक साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है ? यह श्रव्य एवं दृश्य दोनों को समेटे हुए है। नाटक प्रत्यक्ष, कल्पना एवं अध्यवसाय का विषय बन सत्य तथा कल्पना से समन्वित विलक्षण रूप धारण करके दृष्टा एवं पाठक दोनों को मनोरंजन के साथ-साथ समाज-निर्माण एवं परिवर्तन की चेतना प्रदान करते हुए अपने साध्य में दृश्य होनें के कारण सीधे रंगमंच से जुड़ा हुआ है जिसे विविध काव्य के अतिरिक्त ललित कलाएँ तथा कलाकार मिलकर आकार देते हैं । इसमें नाटककार, अनिभनेता, संगीत, दृश्य-विधान, वेशभूषाकार आदि सभी का रचनात्मक सहयोग होता है। जीवन की विसंगतियों , विद्रूपताओं, उसकी विशिष्ट ऐतिहासिक, चारित्रिक, सांस्कृतिक विशेषताओं की व्यापक समझदारी के लिए इस सशक्त माध्यम का अध्ययन अनिवार्य है।

पाठ्य विषय :

- नाटक और रंगमंच का स्वरूप
- नाट्योत्पत्ति संबंधी विविध मत
- नाट्य अध्ययन का स्वरूप
  - नाटक का विधागत वैशिष्ट्य
  - नाटक और रंगमंच का अंतःसंबंध
  - नाटक में दृश्य और श्रव्य तत्त्वों का समायोजन
- नाट्य-भेद
  - भारतीय रूपक-उपरूपकों के भेद (सामान्य परिचय)
  - पारम्परिक नाट्य-रूप : रामलीला, रासलीला, स्वांग, नौटंकी, माच, ख्याल, विदेसिया आदि
  - पाश्चात्य नाटक (सामान्य परिचय)
- नाट्य-विधान : भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि से नाट्य तत्वों का विस्तृत विवेचन
- रंगमंच के प्रकार, रंगशिल्प, रंग संप्रेषण के विविध घटक (मूर्त एवं अमूर्त)
- विश्व के प्रमुख रंग चिंतक : भरत, स्तानिस्लाव्स्की, ब्रेख्त के अभिनय-सिद्धांत।
- हिन्दी नाटक और रंगमंच का संक्षिप्त इतिहास-विकास
  - नाटक का विकास : भारतेंदु, प्रसाग युग, स्वातंत्र्योत्तर काल, नया नाटक।
  - रंगमंच : लोकनाट्य व्यावसायिक, अव्यावसायिक)
  - पारसी, पृथ्वी थियेटर, इप्टा, प्रमुख सरकारी रंग संस्थाएँ, नक्कड़ नाटक।
- हिन्दी नाट्य-चिंतन, भारतेंदु, जयशंकर प्रसाद, मोहन राकेश।

रंगमंच की दृष्टि से हिन्दी (मौलिक एवं अनूचित) नाटकों का विशिष्ट अध्ययन

निम्नलिखित १० नाट्य कृतियों में से किन्हीं ६ कृतियों का निधारण संबंधित विश्वविद्यालय करेगा, जिनसे संबंधित व्याख्याएँ तथा आलोचनात्मक प्रश्न भी पूछे जायेंगे -

१. भारत दुर्दशा - भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
२. अजातशत्रु- जयशंकर प्रसाद
३. लहरों के राजहंस - मोहन राकेश
४. कोमल गांधार - डॉ. शंकर शेष
५. कौमुदी महोत्सव - डॉ. रामकुमार वर्मा
६. कोणार्क - जगदीश चन्द्र माथुर
७. एक सत्य हरिश्चन्द्र - डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल
८. अंधायुग - डॉ. धर्मवीर भारती
९. एक कंठ विषपायी - दुष्यंत कुमार
१०. संशय की एक रात - श्रीनरेश मेहता

द्रुतपाठ हेतु निम्नलिखित में के किन्हीं १० नाटकों का अध्ययन प्रस्तावित है। इनमें से किन्हीं पाँच पर लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएँगे- मृच्छकटिक (शूद्रक, अनु. मोहन राकेश), पगला घोड़ा (बादल सरकार, अनु. प्रतिभा अग्रवाल), घासीराम कोतवाल (विजय तेंदुलकर), तुगलक (गिरीश कर्नाड़, अनु. बच्चन), मैकबैथ (शेक्सपीयर, अनु. बच्चन), खड़िया का घेरा (ब्रेख्त, अनु. कमलेश्वर), गुडाया का घर (इब्सन), बकरी (सर्वेश्वर), चरनदास चोर- (हबीब तनवीर), आठवाँ सर्ग (सुरेन्द्र वर्मा), इन्दरसभा (अनामत)।

अंक विभाजन :

३ व्याख्याएँ : ३ X १० = ३० अंक
२ आलोचनात्मक प्रश्न : २ X १५ = ३० अंक
५ लघूत्तरी प्रश्न : ५ X ४ = २० अंक
२० वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न : २० X १ = २० अंक

अथवा
एम.ए. (हिन्दी) अनिवार्य बीज पत्र -८
दृश्य-श्रव्य माध्यम लेखन

प्रस्तावना :

सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में इलैक्ट्रॉनिक मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो गयी है। हिन्दी भाषा और साहित्य का इन माध्यमों में अधिकाधिक स्तरीय प्रयोग तभी हो सकता है जब इन दृश्य-श्रव्य माध्यमों से संबंधित विधाओं का व्यवस्थित प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया जाए। यह पाठ्यक्रम अत्यंत रोजगारपरक है।

पाठ्य विषय :

- माध्यमोपयोगी लेखन का स्वरूप और प्रमुख प्रकार।
- हिन्दी माध्यम लेखन का संक्षिप्त इतिहास।
- रेडियो नाटक की प्रविधि।
- रंग नाटक, पाठ्यनाटक और रेडियो नाटक का अंतर।
- रेडियो नाटक के प्रमुख भेद - रेडियो धारावाहिक, रेडियो रूपांतर, रेडियो फैन्टेसी, संगीत रूपक, आलेख रूपक (डाक्यूमेंट्री फीचर)
- टी.वी. नाटक की तकनीक। टेली ड्रामा, टेली फिल्म, डाक्यूड्रामा तथा टी.वी. धारावाहिक में साम्य-वैषम्य। संचार माध्यम के अन्य विविध रूप।
- साहित्यिक विधाओं की दृश्य-श्रव्य रूपांतरण-कला। इलैक्टॉनिक मीडिया द्वारा प्रसारित समाचारों के संकलन-संपादन और प्रस्तुतीकरण की प्रविधि।
- संचार माध्यमों द्वारा प्रसारित विज्ञापनों की भाषा।
- विज्ञापन फिल्मों की प्रविधि।
- संचार माध्यमों की भाषा।
- हिन्दी के समक्ष आधुनिक जनसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी की चुनौतियाँ।

अंक विभाजन :

३ आलोचनात्मक प्रश्न : ३ X १५ = ४५ अंक
५ लघुत्तरी प्रश्न : ५ X ४ = २० अंक
१५ वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न : १५ X १ = १५ अंक
प्रायोगिक कार्य-(माध्यमोपयोगी लेखन) = २० अंक

अथवा
एम.ए. (हिन्दी) अनिवार्य बीज पत्र -८
लोक-साहित्य

प्रस्तावना :

हिन्दी जगत में विद्यमान विभाषाओं में अमूल्य लोक-साहित्य संपदा विद्यमान है। इसके संकलन संपादन सर्वेक्षण, प्रकाशन द्वारा ही अपनी मूल राष्ट्रीय संस्कृति को संरक्षित किया जा सकता है और हिन्दी का जनाधार बढ़ाया जा सकता है अस्तु, इसके अध्ययन की उपयोगिता निर्विवाद है।

पाठ्य विषय :

इस प्रश्नपत्र में सैद्धांतिक अध्ययन के साथ संबंधित क्षेत्र के लोक-साहित्य का गहन अध्ययन अपेक्षित है तथा उससे संबंधित प्रायोगिक कार्य भी।

खण्ड-क

- लोक और लोक-वार्ता, लोक-वार्ता और लोक-विज्ञान।
- लोक-संस्कृति : अवधारणा, लोक-वार्ता और लोक-संस्कृति, लोक-संस्कृति और साहित्य।
- लोक-साहित्य : अवधारणा, संस्कृत वाङ्मय में लोकोन्मुखता।
- हिन्दी के आरंभिक साहित्य में लोकतत्व, वर्तमान अभिजात साहित्य और लोक-साहित्य का अंतःसंबंध। लोक-साहित्य का अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंध।
- भारत में लोक-साहित्य के अध्ययन का इतिहास।
- हिन्दी लोक-साहित्य के विशिष्ट अध्येता। लोक-साहित्य की अध्ययन-प्रक्रिया एवं संकलन की समस्याएँ।
- लोक-साहित्य के प्रमुख रूपों का वर्गीकरण -

  लोक-गीत, लोक-नाट्य, लोक-कथा, लोक-नृत्य-नाट्य, लोक-संगीत।

  लोक-गीत : संस्कार-गीत, व्रत-गीत, श्रम-गीत, ऋतु-गीत, जाति-गीत।

  लोक-नाट्य : रामलीला, रासलीला, कीर्तनियाँ, स्वांग, यक्षगान, भवाई, संपेड़ा, विदेसिया, माच, भाँड़, तमाशा, नौटंकी, जात्रा, कथकली।
- हिन्दी लोक-नाट्य की परंपरा एवं प्रविधि। हिन्दी नाटक और रंगमंच पर लोकनाट्यों का प्रभाव।
- लोक-कथा : व्रत-कथा, परी-कथा, नाग-कथा, बोध-कथा, कथानक-रूढ़ियाँ अथवा अभिप्राय।
- लोक-गाथा : ढोला-मारू, गोपीचन्द-भरथरी, लोरिकायन, नल-दमयंती, लैला-मजनूँ, हीर-राँझा, सोहनी-महीवाल, लोरिक-चंदा, बगड़ावत, आल्हा-हरदौल।
- लोक-नृत्य-नाट्य।
- लोक-संगीत : लोकवाद्य तथा विशिष्ट लोक धुनें।
- लोक-भाषा : लोक सुभाषित, मुहावरे, कहावतें, पहेलियाँ।

खण्ड-ख

निम्नलिखित जनपदीय भाषाओं के लोक-साहित्य में से किसी एक का अध्ययन –

राजस्थानी, भोजपुरी, ब्रज, अवधी, बुन्देलखण्डी, हरियाणवी, खड़ीबोली, कुमाऊँनी, गढ़वाली, छत्तीसगढ़ी, बघेली, मालवी।

अंक विभाजन :

३ आलोचनात्मक प्रश्न : ३ X १५ = ४५ अंक

५ लघुत्तरी प्रश्न : ५ X ४ = २० अंक

१५ वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न : १५ X १ = १५ अंक

प्रायोगिक कार्य-(क्षेत्रीय लोक-साहित्य का संकलन) = २० अंक